गढ़वाल के शक्ति स्वरूप – देवालय (शक्तिपीठ) एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. सुमन कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
समाजशास्त्र
पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, रामनगर, नैनीताल

सारांश – सम्पूर्ण जगत के समाजों में मानव समाज सबसे अनोखा तथा आकर्षक है क्योंकि मानव समाज ने संस्कृति का आविष्कार किया, जिसके माध्यम से उसने अपना दिन–प्रतिदिन विकास किया तथा सभी प्राणियों से अपने आप को श्रेष्ठ करके स्थापित किया। आदिम समाज से आधुनिक समाज तक पर्दापण करने में मनुष्य को बहुत लम्बी समय सीमा को तय करना पड़ा है। विभिन्न समाजशास्त्रियों के अनुसार जिनमें रॉबर्ट वीरस्टीड, टायलर, मैलेनोवस्की आदि प्रमुख हैं, जिन्होंने अपनी–अपनी परिभाषाओं को संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में दिया है। संस्कृति के प्रमुख तत्वों में भौतिक तथा अभौतिक तत्वों व पहलू के रूप में देखा जाता है। सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से प्रमुख सिद्धान्तों में प्रकार्यवादी सिद्धान्त तथा अन्तः क्रियावादी प्रमुख हैं।

संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं में मुख्य रूप से यह पाया जाता है कि संस्कृति एक सीखा हुआ व्यवहार या प्रक्रिया है जो सामाजिक व्यवहार तथा संस्कृतिकरण के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है। यह सम्पूर्ण समाज या समुदाय की विरासत के रूप में होती है। यह देखा जाता है कि संस्कृति में सबसे अनूठा गुण परिवर्तनशीलता तथा गतिशीलता पाई जाती है। सामाजिक परिवर्तन का परिणाम सामाजिक परिवर्तन होता है। प्रस्तुत अध्ययन उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल को केन्द्र में रखकर किया गया है।

जिसके अन्तर्गत टिहरी गढ़वाल, चमोली गढ़वाल, रुद्रप्रयाग, उत्तरकाशी तथा पौड़ी गढ़वाल सम्मिलित हैं के सांस्कृतिक तत्व गढ़वाल के शक्ति स्वरूप–देवालय (शक्तिपीठ) शीर्षक को लेकर है जिसके अन्तर्गत देवी के प्रमुख शक्तिपीठ, कालीमठ, नन्दादेवी, मैठाणा देवी, सुरकण्डा देवी, राजराजेश्वरी, धारी देवी आदि का अध्ययन सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभावों के संदर्भ में किया गया है।

कीवर्ड: – अन्तःक्रियावादी सिद्धान्त, संघर्षवादी सिद्धान्त, प्रकार्यवादी सिद्धान्त, सांस्कृतिक परिवर्तन, गढ़वाल के शक्तिपीठ।

प्रस्तुत अध्ययन गढ़वाल के देव सांस्कृतिक एवं सामाजिक अध्ययन पर आधारित है। पौराणिक तथा वैदिक समय में गढ़वाल को हिमवन्त, तपोभूमि, देवभूमि, स्वर्गभूमि और केदारखण्ड से परिचित कराया जाता है। इस क्षेत्र का स्थान भारतीय सांस्कृतिक विकास में बड़ा ही महत्वपूर्ण रहा है। इसके हिमालयी क्षेत्र विभिन्न ऋषि मुनियों की तप की स्थली रही है तथा गंगा, यमुना, जीवदायनी नदियों का उद्‌गम स्थान भी यही है। गढ़वाल में लोकनृत्य, लोकगीत तथा लोक कथाओं का अध्ययन करने पर यह पाया जाता है कि गढ़वाल के हर पर्वत पर देवी–देवता निवास करते हैं। गढ़वाल में पाए जाने वाले प्रमुख शक्ति के मंदिरों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार से है।

नन्दादेवीः– नन्दा देवी को पहाड़ों की ईष्ट देवी के रूप में पूजा जाता है। शक्ति सम्प्रदाय की यह देवी सर्वतः गढ़वाल एवं कुमाऊँ में पूजनीय है। हिमालय की ऊँची चोटी पर (कैलाश पर्वत) नन्दा देवी का निवास स्थान माना जाता है। नन्दा, जया, भद्रा आदि देवी संबोधन नन्दा देवी के ही रूप के पाये जाते हैं। दुर्गा सप्तसती के अनुसार मैं सम्पूर्ण विश्व में अकेली हूँ और सभी देवियाँ मेरी ही विभूति हैं। सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में जैसे मुख्यतया चमोली, दशोली सहित ग्यारह पट्टियों में माँ नन्दा देवी की पूजा बड़े ही धूमधाम के साथ पारम्परिक रूप से की जाती है। नन्दी देवी के

प्रसिद्ध मंदिर चांदपुर में ग्राम नौटी और लोहवां गढ़क्षेत्र में स्थित है। नन्दाष्टमी के पर्व पर नौटी से डोली में पार्वती माता को बिठा कर यात्रा निकाली जाती है। यह जात यात्रा

वैदिनी कुण्ड त्रिशूल पर्वत के नीचे जाती है, जहाँ देवी की आराधना पूजा बड़े समारोह व साथ सम्पन्न की जाती है। नौटी क्षेत्र का गढ़वाल में बड़ा धार्मिक महत्व है। यहाँ चार सींगों वाले भेड़ के साथ प्रतिवर्ष बारहवें वर्ष नन्दा राज जात यात्रा नौटी क्षेत्र से हेमकुंड हिमालयी क्षेत्र तक जाती है। वर्तमान समय में नन्दा देवी राज जात यात्रा वैश्विक व पवित्र आकर्षण का केन्द्र है।

- **कालीमठः–** माँ काली का प्रमुख स्थान उत्तराखण्ड में कालीमठ नामक स्थान है। इसे काली का जागृत सिद्धपीठ के रूप में जाना जाता है। ऐसी मान्यता है कि इसी स्थान पर माँ काली ने शुम्भ और निशुम्भ नामक राक्षसों का वध किया।
- **माँ सुरकण्डा**:– सुरकण्डा देवी गढ़वाल के टिहरी गढ़वाल के चन्द्रबदनी क्षेत्र में सुरकण्डा सती की पूजा होती है। ऐसी मान्यता है कि माँ पार्वती (सती) के जलते हुए शरीर को लेकर जब महादेव शिवजी भ्रमण कर रहे थे तो जहाँ–जहाँ पर उनके शरीर के अंग गिरे वहाँ पर देवी का स्थान बन गया था। इनमें चन्द्रबदनी और सुरकण्डा देवी में देवी की पूजा जागर गीतों तथा देवी मंगलों के माध्यम से की जाती है तथा चली आ रही है।
- **धारी देवी**:– जिला पौड़ी गढ़वाल के श्रीनगर (गढ़वाल) से लगभग 12 से 15 किलोमीटर की दूरी पर कलियासौड़ नामक स्थान पर अलकनन्दा नदी के किनारे यह मंदिर स्थापित है। इसे स्थानीय लोगों द्वारा कल्याणी देवी भी कहा जाता है। उत्तराखण्ड के तथा देश–विदेश के लोग अपनी मनोकामना एवं श्रद्धा हेतु धारी देवी माँ के चरणों में आते दिखाई देते रहे हैं। ऐसी लोक मान्यता है कि जब देवी की काले पत्थर की सुन्दर एवं पवित्र मूर्ति बहकर कल्यासौण के पास अलकनन्दा नदी की ओट में ठहर गई, तो देवी की आज्ञा पाकर कुंज नामक धुनार ने मूर्ति को वर्तमान मंदिर के चबूतरे में स्थापित कर दिया गया था। प्रातःकालीन समय में इस

मूर्ति में सौम्यता तथा रौद्ध व सायंकाल में वृद्ध माता का शांतिप्रिय स्वरूप के दर्शन भक्तों को होते हैं।

- **महिषमर्दिनी**:– स्थानीय लोक मान्यताओं के दृष्टिगत अध्ययन में यह पाया गया कि राक्षस महिषासुर का वध देवी ने मैखण्डा में किया। गढ़वाल क्षेत्र की पट्टी तल्लीहाट में स्थित त्रियुगी जाख श्रीनगर तथा देवलगढ़ में देवी के अनकों मंदिर हैं।
- **ज्वालपा देवी**:– इसे अति शक्ति स्वरूप देवी के रूप में पूजा जाता है। इस देवी का मंदिर गढ़वाल पौड़ी क्षेत्र की पट्टी कफोलस्यू स्थान पर नयार पश्चिमी गंगा के किनारे पर स्थित है। इस मंदिर की प्रमुख विशेषता यह है कि इस देवी की पूजा अविवाहित कन्याओं द्वारा सुयोग्य एवं उत्तम वर की प्राप्ति हेतु की जाती है।
- **नैना देवी मंदिरः–** नैनीडांडा क्षेत्र, जिला पौड़ी गढ़वाल में यह मंदिर स्थापित है, जोकि एक शक्तिपीठ है।
- **उमा देवी मंदिरः–** उमा का प्रसिद्ध तथा ऐतिहासिक मंदिर कर्णप्रयाग में पिंडर और अलकनन्दा नदी के संगम पर अवस्थित है। इस मंदिर का निर्माण शंकराचार्य जी के द्वारा करवाया गया था।
- **भुवनेश्वरी देवी मंदिर**:– विकासखण्ड कोट, पौड़ी गढ़वाल देवलगांव तथा विकासखण्ड एमकेश्वर पौड़ी में माता भुवनेश्वरी देवी का मंदिर है।
- **अनुसूइया देवी**:– जनपद चमोली ऊखीमठ सड़क मार्ग से गोपेश्वर–ऊखीमठ से लगभग 5–7 कि.मी. की दूरी पर अनुसूइया देवी का मंदिर स्थित है। दिसम्बर के समय यहाँ मेला आयोजित होता है। भक्त सन्तान की प्राप्ति की इच्छा से यहाँ आते हैं।
- **अम्बिकाः–** पौड़ी गढ़वाल (देवलगढ़) चमोली (तपोवन) में अम्बिका (गौरी) का मंदिर स्थित हैं।

- **चामुण्डाः–** विचला नागपुर डूंगर तथा उदयपुर पट्टी के खैरा नामक स्थान पर चामुण्डा देवी की पूजा विशेष रूप से की जाती है।
- **चण्डिकाः–** चमोली जनपद (गढ़वाल) में चण्डिका देवी के नौ मंदिर पाए जाते हैं।

भगवती नन्दा को देवी पार्वती के रूप में पूजा जाता है। समाजशास्त्रीय परिपेक्ष्य में देखने पर यह तथ्य सामने आता है। गढ़वाल की पारम्परिक संस्कृति से ही महिलाओं को विशेष स्थान समाज में दिया जाता है तथा पुरूष और महिला को एक दूसरे के पूरक के रूप में देखा जाता है। समाज–परिवार तथा राष्ट्र के निर्माण में महिला एवं पुरूष दोनों के सह अस्तित्व को समझा गया है। यह शक्तिपीठ माताओं तथा बहनों के मनोबल तथा प्रमुख भूमिकाओं को दर्शाते हैं तथा समाजिक संरचना में महिलाओं के स्थान को सर्वोपरि घोषित करते हैं। यह मानव समाज की एकाग्रता, भयमुक्त वातावरण, शांति, प्रेम और सद्भावना के आर्दशों को स्थापित करते हैं और यह सांस्कृतिक तत्व किसी समाज की प्रगति तथा खुशहाली के लिए मील के पत्थर हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

- सिंह भजन – आर्यो का आदी देश हिमालय
- डॉ0 शाह गिरिराज – उत्तराखण्ड, आर्य संस्कृति मूल स्रोत, त्रिशूल प्रकाशन, बरेली।
- डॉ0 डबराल शिव प्रसाद – उत्तराखण्ड का इतिहास – वीरगाथा प्रकाशन, दुगड्डा गढ़वाल।
- डॉ0 सतेन्द्र कुश, डॉ0 वैराठी कृष्ण – कुमाऊँ की लोक कला – संस्कृति और परम्परा – अल्मोड़ा बुक डिपो
- रतूड़ी हरिकृष्ण – गढ़वाल का इतिहास, टिहरी गढ़वाल
- सिंह शूरवीर – गढ़वाल के प्रमुख अभिलेख एवं दस्तावेज, टिहरी गढ़वाल
- रावत अजय – हिस्ट्री ऑफ गढ़वाल, दिल्ली